आरती श्री बजरंगबली की

आरती कीजै हनुमान लला की । दुष्ट दलन रघुनाथ कला की ॥

जाके बल से गिरवर काँपे । रोग दोष जाके निकट न झाँके ।।

अंजनि पुत्र महा बलदाई । संतन के प्रभु सदा सहाई ॥

दे बीरा रघुनाथ पठाये । लंका जारि सिया सुधि लाये ॥

लंका-सो कोट समुद्र सी खाई । जात पवनसुत बार न लाई ॥

लंका जारि असुर सियारामजी के काज संहारे । सँवारे ॥

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे । आनि संजीवन प्राण उबारे ॥

पैठि पाताल तोरि जम कारे । अहिरावण के भुजा उखारे ॥

बाईं भुजा असुर संहारे । दाहिने भुजा संतजन उबारे ॥

सुर-नर-मुनि जन आरति उतारें । जै जै हनुमान उचारें ॥

कञ्चन थार कपूर लौ छाई । आरति करत अञ्जना माई ॥

जो हनुमान जी की आरती गावै । बसि बैकुण्ठ परम पद पावै ॥

सभी आरती के पीडीएफ कहीं भी डाउनलोड

atozpe.in